P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सी.बी.एस.ई. व आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की स्थिति एवम् इसके प्रति अभिधारकों का अभिमत (एक तुलनात्मक अध्ययन)

मोनिका भादविया
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान

सारांश

प्रस्तुत शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य सी.बी.एस.ई. व आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की स्थिति एवं इसके प्रति अभिधारकों के अभिमत ज्ञात करना है। प्रस्तुत शोध कार्य में सैकण्डरी स्तर पर आन्तरिक एवं बाह्य मूल्यांकन का अवलोकन किया जायेगा। प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श के रूप में राजस्थान राज्य के उदयपुर जिले के 20 विद्यालयों का चयन किया गया है। दत्त संकलन हेतु विद्यार्थियों, अभिभावकों व प्रधानाचार्यो के अभिमत लिये जायेंगे व प्राप्त परिणामों के आधार पर आवश्यक समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत किये जायेंगे।

मुख्य शब्द : CBSE, RBSE, मूल्यांकन, अभिधारक, अभिमत, परिसीमन

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह अपना सम्पूर्ण जीवन समाज में रहकर ही व्यतीत करता है। अरस्तु ने कहा है कि ''जिस व्यक्ति को समाज की आवश्यकता नहीं वह या तो देवता है या पशु।'' मनुष्य को सामाजिक प्राणी बनाने में शिक्षा का अत्यधिक महत्व है, शिक्षा का मतलब है – सीखना। सीखना जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।

वर्तमान में विद्यालय वह औपचारिक संस्था है जो सिखाने का कार्य करती है। जब भी बालक को कुछ सिखाया जाता है तो समय–समय पर इस बात की जाँच की जाती है कि उसने कितना सीखा। इस जाँचने को ही शिक्षा में मूल्यांकन के नाम से सम्बोधित किया जाता है। आरम्भ से लेकर वर्तमान तक मूल्यांकन के विभिन्न तरीकों को अपनाया गया है जैसे – मौखिक परीक्षा, लिखित परीक्षा, प्रायोगिक कार्य इत्यादि। मूल्यांकन की इन्हीं सब विधियों में समय–समय पर परिवर्तन किया गया है।

वर्तमान समय में राजस्थान राज्य में सैकण्डरी स्तर पर मुख्यतः दो प्रकार के विद्यालयों की प्राथमिकता है जो कि सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ सैकेण्डरी एजूकेशन (CBSE) व राजस्थान बोर्ड ऑफ सैकेण्डरी एज्यूकेशन (RBSE) से संचालित है। दोनों ही विद्यालयों में मूल्याकंन की अलग–अलग प्रणालियों को अपनाया गया है व समय–समय पर इन प्रणालियों में परिवर्तन भी किए गए है। जैसे – प्रारम्भिक समय में त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक व वार्षिक परीक्षाओं का होना इसके अन्तर्गत लिखित, मौखिक, व प्रायोगिक मूल्यांकन करना, समय के साथ ही सी.बी.एस.ई. विद्यालयों में सन् 2010 से सतत् व समग्र मूल्यांकन के अन्तर्गत FA (रचनात्मक मूल्यांकन) व SA (योगात्मक मूल्यांकन) पद्धति के द्वारा मूल्यांकन किया जा रहा था लेकिन वर्ष 2015 से वह अपनी इस मूल्यांकन प्रणाली में भी कुछ परिवर्तन कर रहे है इन्ही सब बातों को ध्यान में रखकर शोधार्थी के मन में कई सवाल उत्पन्न हुए जो इस प्रकार है :–

1. CBSE व RBSE विद्यालयों मे मूल्यांकन की यथास्थिति (प्रयुक्त प्रणालियाँ) क्या है?
2. CBSE व RBSE विद्यालयो की मूल्यांकन प्रणाली में अभिधारकों के अभिमत किस प्रकार है।
3. क्या वे मूल्यांकन की इन प्रणालियो से सन्तुष्ट है, और अगर है तो किस सीमा तक?
4. साथ ही जिन उद्देश्यों को लेकर इन प्रणालियों को लागू किया गया है क्या वे उद्देश्य पूरे हो रहे है?

इन सारी बातों को ध्यान में रखकर ही शोधार्थी के मन में यह इच्छा जाग्रत हुई कि वह इन सवालों के जवाब प्राप्त करें। इसी आधार पर शोधार्थी ने

उदयपुर के 20 विद्यालयों का चयन कर इस कार्य को पूर्ण करने के लिए समस्या के रूप में इस विषय का चयन किया है।

शोध की आवश्यकता व महत्व

साहित्य के अवलोकन से पता चलता है कि विभिन्न स्तर पर मूल्यांकन की वर्तमान स्थिति समस्याएँ, मुद्दो, माध्यमिक एवं प्राथमिक स्तर पर सतत् एवं समग्र मूल्यांकन की स्थिति का अध्ययन, मौखिक परीक्षा, ग्रेडिंग प्रणाली के प्रति अभिधारकों के अभिमत, विद्यालय के विकास आन्तरिक एवं बाह्य मूल्यांकन के सम्बन्ध आदि का अध्ययन पूर्व में किया जा चुका है। राजस्थान में CBSE Board व RBSC Board द्वारा संचालित विद्यालय प्रमुख रूप से है। दोनो ही प्रकार के विद्यालयों में मूल्यांकन की भिन्न–भिन्न प्रणाली को अपनाया गया है। CBSE Board ने सन् (2010) से सभी केन्द्रीय विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर सतत् एवं समग्र मूल्यांकन प्रणाली लागू की गई व वर्तमान समय में इस व्यवस्था में पुनः बदलाव करने पर विचार किया जा रहा है। उक्त मूल्यांकन व्यवस्था की स्थिति एवं प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े अभिधारकों (शिक्षक, विद्यार्थी, प्रधानाचार्य) का अभिमत मूल्यांकन के प्रति क्या है। इस क्षेत्र में अभी तक कोई भी कार्य नहीं किया गया है। अतः अध्ययन की दृष्टि से यह एक महत्वपूर्ण क्षेत्र माना जा रहा है। अतः ऐसे महत्वपूर्ण एवं उपयोगी क्षेत्र पर वांछनीय शोध कार्य अपरिहार्य बन जाता है।

समस्या कथन –

'' सी.बी.एस.ई. व आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की स्थिति एवंम् इसके प्रति अभिधारकों का अभिमत'' (एक तुलनात्मक अध्ययन)

"The status of Evaluation in CBSE & RBSE Schools and opinion of stackholder's towards it" (A comperative study)

शोध प्रश्न

समस्या के चयन के बाद शोधार्थी के मन में जो प्रश्न उभर कर आये उनके उत्तर प्राप्त करने के लिए यह शोधकार्य किया जायेगा। इस शोध हेतु निम्न शोध प्रश्न बनाये गये है –

1. सी.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की यथा स्थिति (प्रयुक्त प्रणालियाँ) क्या है?
2. सी.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की पद्धति पर जो समय–समय पर परिवर्तन हुए है, उस पर अभिधारकों के क्या अभिमत है ?
3. सी.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन प्रणाली को कैसे अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है?
4. आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की यथा स्थिति (प्रयुक्त प्रणालियाँ) क्या है?
5. आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की पद्धति पर जो समय–समय पर परिवर्तन हुए है, उस पर अभिधारकों के क्या अभिमत है ?
6. आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन प्रणाली को कैसे अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है?

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध समस्या अध्ययनार्थ शोधार्थी ने निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए –

1. सी.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की यथा स्थिति (प्रयुक्त प्रणालियाँ) का अध्ययन करना ।
2. सी.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन प्रणाली के प्रति विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं प्रधानाचार्य के अभिमत का अध्ययन करना ।
3. सी.बी.एस.ई. विद्यालयों मे मूल्यांकन प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाने हेतु सुझावात्मक प्रारूप प्रस्तुत करना।
4. आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की यथास्थिति (प्रयुक्त प्रणालियाँ) का अध्ययन करना ।
5. आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन प्रणाली के प्रति विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं प्रधानाचार्य के अभिमत का अध्ययन करना ।
6. आर.बी.एस.ई. विद्यालयों मे मूल्यांकन प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाने हेतु सुझावात्मक प्रारूप प्रस्तुत करना।
7. सी.बी.एस.ई. व आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की स्थिति (प्रयुक्त प्रणालियाँ) का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
8. सी.बी.एस.ई. व आर.बी.एस.ई.विद्यालयों के विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं प्रधानाचार्यों के अभिमत का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

अध्ययन में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या –

CBSE – सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ सैकेण्डरी एज्यूकेशन

CBSE विद्यालयों से तात्पर्य उन विद्यालयो से है जिनमे पाठ्यक्रम संचालन केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा निर्धारित किया जाता है।

RBSE – राजस्थान बोर्ड ऑफ सैकेण्डरी एज्यूकेशन

RBSE विद्यालयों से तात्पर्य उन विद्यालयो से है जिनमे पाठ्यक्रम संचालन राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा निर्धारित किया जाता है।

मूल्यांकन

मूल्यांकन प्रणाली से तात्पर्य मूल्यांकन की उस प्रक्रिया से है जो वर्ष पर्यन्त बिना रूके विद्यार्थी की शैक्षिक एवं सह शैक्षिक गतिविधियों का मापन करती है। प्रत्येक कार्य जो विद्यार्थी वर्ष भर करता है, वे सभी मूल्यांकन में आते है।

अभिधारक

अभिधारक शब्द से तात्पर्य है कि विद्यार्थी, अध्यापक, विद्यालय प्रशासक, प्रधानाचार्य, प्रशासक, विशेषज्ञ जो किसी विद्यालय से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े होते है।

इस शोध अध्ययन में निम्नांकित अभिधारक है :–

1. विद्यार्थी
2. अध्यापक
3. प्रधानाचार्य

अभिमत

अभिमत व्यापक अर्थों में एक राष्ट्र के जीवन का विस्तृत संवेग है। समाजशास्त्री इसे लोगों की संस्कृति भी कहते है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

''किसी विषय वस्तु या मुद्दों के बारे में कोई क्या सोचता है, वहीं अभिमत कहलाता है।''

.....ऑक्सफोर्ड शब्दकोश

परिसीमन

शोध का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक एवं विस्तृत होता है। अतः समस्या के क्षेत्र को नियंत्रित करके इसके प्रभावशाली एवं सार्थक अध्ययन हेतु निम्न रूप से परिसीमन किया है।

क्षेत्रवार परिसीमन

यह शोधकार्य केवल उदयपुर जिले तक सीमित है।

विद्यालयवार

प्रस्तुत अध्ययन 20 विद्यालयों तक ही सीमित है, जहाँ नियमित रूप से CBSE व RBSE मूल्यांकन प्रणाली लागू है।

स्तरवार

केवल कक्षा 9 से 10 तक के उन विद्यार्थियों का ही चयन किया जाएगा जो CBSE व RBSE विद्यालयों में अध्ययनरत है।

अनुसंधान विधि

इस शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

अनुसंधान उपकरण

प्रस्तुत शोध में निम्न स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया जाएगाः–

1. अभिमतावली
   - अ. विद्यार्थियों हेतु अभिमतावली
   - ब. अध्यापकों हेतु अभिमतावली
   - स. प्रधानाचार्य से साक्षात्कार
2. सम्बन्धित विद्यालयों के Document : (Curriculum, Question paper, exam, data sheet, results etc.)

सांख्यिकीय प्रविधि

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु दत्तों का विश्लेषण करने के लिए प्रतिशत मान सांख्यिकीय प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा।

न्यादर्श

किसी भी शोधकार्य की सफलता का आधार न्यादर्श होता है अतः शोधार्थी ने समस्या पर विचार करते हुए न्यादर्श का चयन किया जिससे वह वास्तविक जनसंख्या का प्रतिनिधित्व कर सके इसे निम्नानुसार स्पष्ट किया गया है –

उदयपुर जिले के सी.बी.एस.ई एवं आर.बी.एस.ई विद्यालयों की लिस्ट प्राप्त कर रेन्डम सेम्पलिंग के आधार पर विद्यालयों का चयन किया जायेगा, जिसमें सी.बी.एस.ई एवं आर.बी.एस.ई के 10–10 विद्यालय होंगे व कक्षा 10 के विद्यार्थी होंगे।

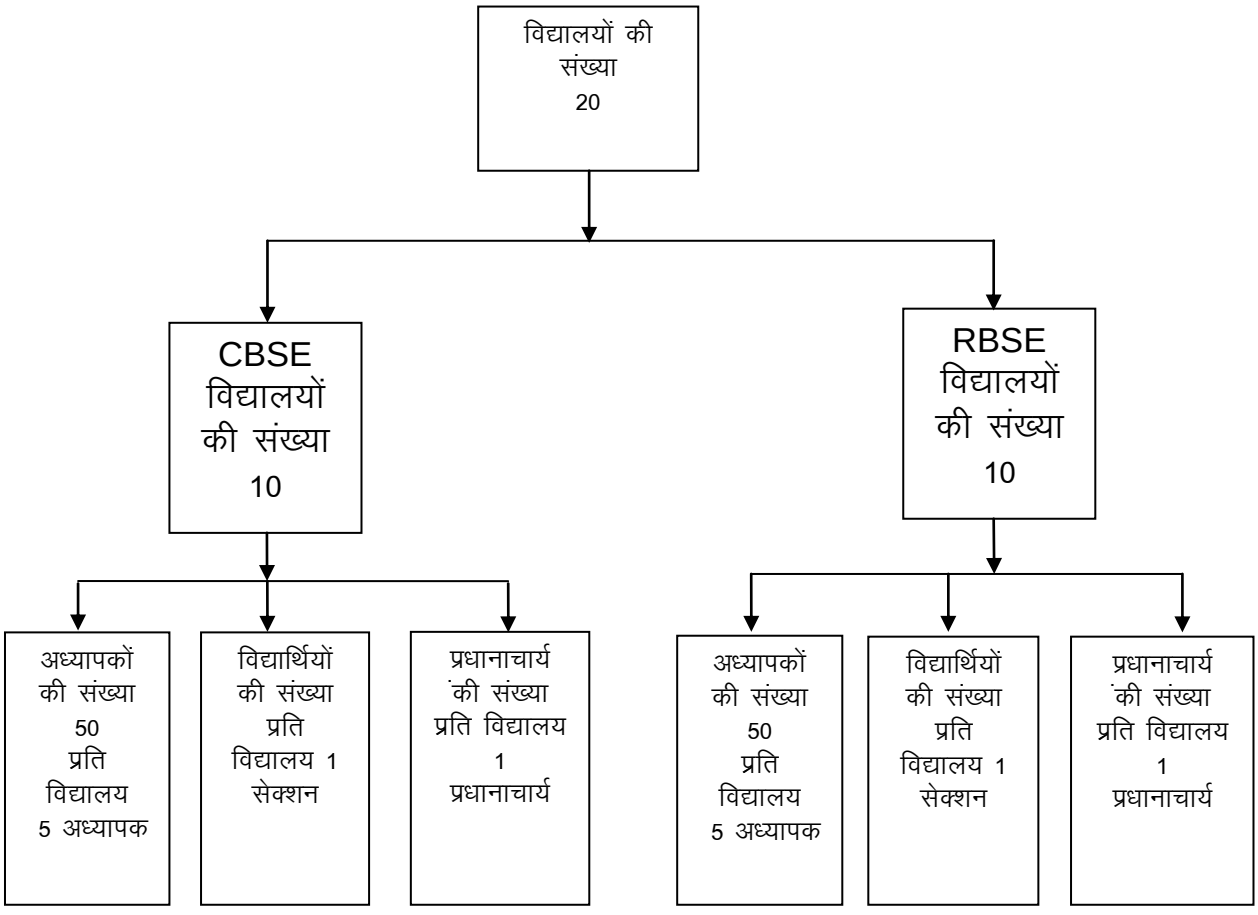

समस्या का औचित्य

किसी भी अध्ययन का औचित्य उसके परिणामों की विस्तृत क्षेत्र में सार्थकता एवं उपयुक्तता के आधार पर निश्चित किया जाता है, इस समस्या का औचित्य भी यह जानना है कि CBSE व RBSE विद्यालयों में मूल्यांकन की स्थिति (प्रयुक्त प्रणालियाँ) का पता लगाना। मूल्यांकन पर अभिधारकों के अभिमत का पता लगाना। भविष्य में इस प्रणाली के प्रभाव का आंकलन करना।

शोध के पश्चात् मूल्यांकन को अधिक प्रभावी बनाने के लिए सुझावात्मक प्रारूप प्रस्तुत कर सकेंगे। जिससे कि विद्यार्थियों, अध्यापकों व नीति निर्धारकों के समक्ष मूल्यांकन की नवीन समझ विकसित हो सकेगी व भविष्य में वह इस प्रणाली को अपना कर लाभान्वित हो सकेंगे।

माध्यमिक स्तर पर मूल्यांकन के लिए भावी योजनाएँ

राजस्थान राज्य में माध्यमिक स्तर पर मुख्य रूप से सी.बी.एस.ई. व आर.बी.एस.ई. बोर्ड द्वारा संचालित विद्यालय है । इन विद्यालयों मे आन्तरिक एवं बाह्य मूल्यांकन किस रूप में हो रहा है, शोध द्वारा इन विद्यालयों की वस्तुस्थिति का पता लगा कर व अभिधारकों के अभिमतों को जानकर आवश्यक समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत किये जायेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *Best, J.W., & Kahn, J.V. (2012). Research in Education.(10th ed.). New Delhi: Prentice Hall of India Learning Private Limited.*
2. *Good, C.V.(1959). Introduction of Educational Research. (2nd ed.). New York: Appleton Century Crafts Ins.*
3. *Vockel, E.L. (1983). Educational Research. New York : McMillan Pub. Co. Inc.*
4. *भटनागर, आर.पी., & भटनागर, ए.बी. (1995). शिक्षा अनुसंधान. मेरठ : लॉयल बुक डिपो।*
5. *चौधरी, डॉ. दामीना एवं सिंह राजपाल आदि (2007) ''शिक्षा में अनुसन्धान पद्धतियां'' कोटा वर्द्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय*
6. *ढौंढियाल,एस.एन., & फाटक, ए.बी. (1972). शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र. जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।*
7. *गुप्ता, एस.पी. (2003). सांख्यिकीय विधियाँ. इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।*
8. *पाण्डेय, के.पी. (2005). शैक्षिक अनुसंधान. आगरा : विश्वविद्यालय प्रकाशन।*
9. *शर्मा, आर.ए. (1995). शिक्षा अनुसंधान. मेरठ : आर. लाल बुक डिपो।*
10. *सुखिया, एम.पी., & मेहरोत्रा, एस.पी. (1976). शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्त्व. आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।*
11. *1952): विशाल शब्द सागर. नई दिल्ली : आदेश बुक डिपो।*